वाक्य बिचार

वाक्य : सार्थक सबद इया पद के बेवस्थित समूह के वाक्य कहल जा हे। **जइसे** : मोहन किताब पढ़इत हे।

एकरा में 'मोहन' 'किताब' आउ 'पढ़इत हे' मिल के एगो सार्थक क्रमबद्ध पद समूह बनावऽ हे। ई लेल ई एगो वाक्य हे।

वाक्य मनुस्य के बिचारन के पूर्नता परगट करऽ हे। वाक्य ऊ सार्थक ध्वनि हे जेकर माध्यम से लेखक लिख के आउ बक्ता बोल के अप्पन भाव इया बिचार के पाठक इया स्रोता पर परगट करऽ हथ।

वाक्य के बिसेसता : वाक्य में आयल पद–समूह के तीन गो बिसेसता होवऽ हे : (क) जोग्यता (ख) अकांच्छा (ग) क्रम

(क) जोग्यता– जब वाक्य के प्रत्येक पद इया सबद अप्पन अर्थ्र परगट करे में सहायक होवे, तऽ समझे के चाही कि वाक्य में जोग्यता बर्तमान हे। **जइसे** : हम बंदूक से लिखइत ही।

ई वाक्य में जोग्यता के अभाव हे। इहाँ 'बंदूक' के जगह 'कलम' के परयोग होवे के चाही।

(ख) अकांच्छा : वाक्य के एक पद के सुन के दूसर पद सुने के जे सोभाविक लालसा जागऽ हे, ओकरा अकांच्छा कहल जा हे। **जइसे** :

ईमानदार आउ परिस्रमी के.....

ई कहला से अकांच्छा पूर्न न होवे;

आगे सुने के उत्कंठा बनल रहऽ हे।

एकरा जदि नीचे लिखल तरी कहल जाए :

''ईमानदार आउ परिस्रमी के सगरो कद्र होवऽ हे।''

अइसन कहे से अकांच्छा पूर जा हे। ई लेल ई एगो वाक्य हे।

(ग) क्रम : वाक्य में प्रयुक्त पद इया सबद के बिधिवत स्थापना के क्रम कहल जा हे। **जइसे** : घरे राम गेलक।

ई वाक्य ठीक न हे। 'घरे' सबद के राम के बाद आवे के चाही आउ वाक्य ई प्रकार से होवे के चाही। 'राम घरे गेलक'।

वाक्य भेद

वाक्य के *तीन तरह* से भेद कैल जा सकलक हे :

1. रचना के दृस्टि से 2. क्रिया के दृस्टि से 3. अर्थ के दृस्टि से

1. रचना के दृस्टि से वाक्य के ***तीन भेद*** होवऽ हे :

(क) सरल वाक्य (ख) मिस्र वाक्य (ग) संजुक्त वाक्य

(क) सरल वाक्य : जउन वाक्य में एकेगो क्रिया होवऽ हे, ओकरा सरल वाक्य कहल जा हे। **जइसे** :

ऊ सब घुमे जइतो। हमनी भात खा रहलियो हे।

ई दुन्नो वाक्य सरल हे काहे कि एकरा में एक–एक क्रिया हे।

(ख) मिस्र वाक्य : जउन वाक्य में एक सरल वाक्य के अलावा ओकर अधीन एक इया एक से अधिक आस्रित उपवाक्य रहे, ओकरा मिस्र वाक्य कहल जा हे। **जइसे** :

(i) बाबूजी देरी से अतथुन, काहे कि ऊ मेला गेल हथुन।

(ii) ऊहाँ के–के गेल हे, हम न जानऽ ही।

मिस्र वाक्य में पहिला के मुख्य वाक्य इया मुख्य उपवाक्य आउ दूसर वाक्य के सहायक वाक्य इया आस्रित उपवाक्य कहल जा हे। इहाँ ''बाबूजी देरी से अतथुन'' आउ ''उहाँ के–के गेल हे'' मुख्य वाक्य हे आउ बाकी सहायक वाक्य हे।

(ग) संजुक्त वाक्य : जउन वाक्य में एक से जादे सरल इया मिस्र वाक्य के मेल संजोजक अब्यय द्वारा होवऽ हे, ओकरा संजुक्त वाक्य कहल जा हे। **जइसे** :

(i) तूँ ई बार बड़ी मेहनत कैलऽ हे, **ई लेल** सफलता जरूरे मिलतो।

(ii) सूरज उगल **आउ** कुहा फट गेल।

पहिला वाक्य में 'ई लेल' आउ दुसरका में 'आउ' संजोजक अब्यय हे जे सरल वाक्यवन के जोड़ के संजुक्त वाक्य बनयलक हे।

संजुक्त वाक्य में सब्भे वाक्य अप्पन स्वतंत्र सत्ता बना के रखऽ हे आउ एकरा में कोई एक दूसरा पर आस्रित न रहे।

2. क्रिया के दृस्टि से वाक्य के *तीन भेद* होवऽ हे :

(क) करतरीवाचक वाक्य

(ख) कर्मवाचक वाक्य

(ग) भाववाचक वाक्य

(क) करतरीवाचक वाक्य : जउन वाक्य में क्रिया के रूप कर्त्ता के लिंग, बचन आउ पुरुस के अनुसार होवऽ हे, ओकरा करतरीवाचक वाक्य कहल जा हे। **जइसे** : ऊ रमायन पढ़ऽ हे। राधा घर जा हे।

(ख) कर्मवाचक वाक्य : जउन वाक्य में क्रिया के रूप कर्म के अनुसार होवऽ हे, ओकरा कर्मवाचक वाक्य कहल जा हे। **जइसे** :

ओकरा से रमायन पढ़ल न जा हे। हमरा से भात खायल न जा हे।

(ग) भाववाचक वाक्य : जउन वाक्य में क्रिया कर्त्ता आउ कर्म के अनुसार न रह के स्वतंत्र रूप से पुल्लिंग, एकबचन आउ अन्यपुरुस में हो हे, ओकरा भाववाचक वाक्य कहल जा हे। **जइसे** :

हमरा से घामा में न चलल जाए। बुतरुअन से दउड़ल न जाए।

3. अर्थ के दृस्टि से वाक्य के आठ भेद होवऽ हे।

(क) बिधिबोधक वाक्य : जउन वाक्य से कोई बात के होवे के सामान्य बोध होवे, ओकरा बिधिबोधक वाक्य कहल जा हे। **जइसे** :

सरलवाक्य : हम कबड्डी खेललीं।

मिस्रवाक्य : जब हम कबड्डी खेल चुकली, तब ऊ पहुँचल।

संजुक्तवाक्य : हम कबड्डी खेललीं आउ खूब मजा लेली।

(ख) आग्याबोधक वाक्य : जउन वाक्य से आग्या के बोध होवे, ओकरा आग्याबोधक वाक्य कहल जा हे।

जइसे : तूँ पढ़ऽ। तूँ हिआँ से चल जा।

दरवाजा बन्द करऽ। सोझ खड़ा रहऽ।

(ग) **निसेधबोधक वाक्य** : जेकरा से काम के न होवे के बोध होवे ओकरा निसेधबोधक वाक्य कहल जा हे।

जइसे : **सरल वाक्य** : हम रोटी न खैली।

मिश्र वाक्य : हम रोटी न खैली, से हम्मर मन खुस न हे।

संजुक्त वाक्य : हम पढ़ाई न कैली आउ एही से हमरा पाठ इयाद न होयल।

(घ) **प्रस्नबोधक वाक्य** : जउन वाक्य से कउनो प्रस्न पूछल जाय के बोध होवे ओकरा प्रस्नबोधक वाक्य कहल जा हे।

जइसे : तोर का नाम हवऽ? तूँ किनकर लइका हऽ?

(ङ) **संदेहबोधक वाक्य** : जेकरा से कोई प्रकार के संदेह के बोध होवे, ओकरा संदेहबोधक वाक्य कहल जा हे।

जइसे : ऊ अब खा लेल होत। गाड़ी अब पहुँच गेल होत।

(च) **बिस्मयबोधक वाक्य** : जेकरा से आस्चर्ज, हर्स, बिसाद आदि के बोध होए, ओकरा बिस्मयबोधक वाक्य कहल जा हे।

जइसे : हाय! कइसन टूटल सड़क हइ । अहा ! केतना सुन्दर लड़की हइ ।

(छ) **संकेतबोधक वाक्य** : जहाँ एक वाक्य दूसर वाक्य के संभावना पर निरभर करे, हुआँ संकेतबोधक वाक्य हो हे।

जइसे : बदरी न लगइत, तऽ कपड़ा सुख जाइत। तूँ आ जइतऽ, तऽ काम हो जाइत।

(ज) **इच्छाबोधक वाक्य** : जउन वाक्य से इच्छा, कामना, असीरबाद आदि के बोध होवे ओकरा इच्छाबोधक वाक्य कहल जा हे।

जइसे : भगवान तोर भला करथ। तोर जातरा सफल होवे।

अभ्यास के प्रस्न

1. वाक्य केकरा कहल जा हे? एकर बिसेसता लिखऽ।
2. रचना के दृस्टि से वाक्य के भेद करइत एकर बरनन करऽ।
3. किया आउ अर्थ के दृस्टि से वाक्य के भेद करइत एकर बरनन करऽ।

वाक्य–बिग्रह

वाक्य-बिग्रह : कउनो वाक्य के सब्भे अंग के अलगे–अलगे करके ओकर पारस्परिक संबंध देखावे के क्रिया के वाक्य–बिग्रह कहल जा हे। वाक्य–बिग्रह के वाक्य–बिस्लेसन आउ वाक्य बिभाजन भी कहल जा हे।

सरल वाक्य के बिग्रह :

सरल वाक्य के ***दू खंड*** होवऽ हे :

(1) उद्देस्य (2) बिधेय

1. उद्देस्य : कउनो वाक्य में जउन कोई बिसय इया बस्तु के बारे में कुछ कहल जाए, ओकरा उद्देस्य कहल जा हे।

जइसे : राम किताब पढ़ऽ हे। सीता बाग में गेलक।

इहाँ 'राम' आउ 'सीता' उद्देस्य हे।

उद्देस्य के बिस्तार : जउन सबद उद्देस्य के बिसेसता बतलावे ओकरा उद्देस्य के बिस्तार कहल जा हे।

जइसे : दशरथ पुत्र राम बिजयी भेलन। मेहनती लड़का सफल होवऽ हे।

इहाँ पहिला वाक्य में 'दसरथ पुत्र' आउ दुसरका वाक्य में 'मेहनती' उद्देस्य के बिस्तार हे काहे कि ई क्रम से राम आउ लड़का के बिसेसता बतावित हे।

2 बिधेय : जउन सबद द्वारा उद्देस्य के बिसय में कुछ कहल जाए, ओकरा बिधेय कहल जा हे।

जइसे : तोर भाई खा रहलथुन हे। लइकन खेल रहलइ हे।

इहाँ पहिला वाक्य में 'खा रहलथुन हे' आउ

दूसर वाक्य में 'खेल रहलइ हे' बिधेय हे काहे कि ई अप्पन-अप्पन उद्देस्य के बारे में बतावित हे।

बिधेय के बिस्तार : जउन सबद बिधेय के बिसेसता बतावऽ हे ओकरा बिधेय के बिस्तार कहल जा हे।

जइसे : राम **गते–गते** दउड़ऽ हे। राधा **कलम से** लिखऽ हे।

इहाँ 'गते–गते' आउ 'कलम से' बिधेय के बिस्तार हे।

बिधेय के बिस्तार के कई रूप हे :

(क) कारक से : रावन **तीर से** मारल गेल।

(ख) क्रियाबिसेसन से : कनिवाँ **सले–सले** डेग धरइत हे।

(ग) वाक्यांस : साहेब **पाँच बजे के बादे** घरे अतथिन।

(घ) पूर्बकालिक क्रिया से : ऊ **पढ़ के** सूत गेल।

(ङ) क्रियाद्योतक से : ऊ **चलइत–चलइत** थक गेल।

सरल वाक्य के बिग्रह के उदाहरन :

1. अरजुन कुन्ती के बेटा कौरव मित्र कर्न के बान से मारलन।

2. गीता तोर छोट बहिन अप्पन मुख से सुन्दर गीत गा रहल हे।

उद्देस्य (कर्त्ता)	उद्देस्य		बिधेय		
	उद्देस्य के बिस्तार	क्रिया	कर्म	बिधेय के बिस्तार	
				कर्म के बिस्तार	क्रिया के पूरक इया अन्य बिस्तार
अरजुन	कुन्ती के बेटा	मारलन	कर्न के	कौरवमित्र	बान से
गीता	तोर छोट बहिन	गा रहल हे	गीत	सुन्दर	अप्पन मुख से

मिस्र वाक्य के बिग्रह : मिस्र वाक्य ऊ हे, जेकरा में एगो प्रधान उपवाक्य आउ एक इया एक से अधिक आस्रित उपवाक्य रहऽ हे। अइसन वाक्य के बिग्रह में प्रधान उपवाक्य आउ आस्रित उपवाक्य के हिगरा के उनका पारस्परिक सम्बन्ध बतावे पड़ऽ हे।

जइसे : रमेश कहलक कि ओकर छोट भाई, जे लोथ हे, बराती न जायत, काहे कि ऊ घुर–फिर न सकऽ हे।

(क) मोहन कहलक : प्रधान उपवाक्य ('क' में प्रयुक्त सकर्मक क्रिया 'कहलक' के कर्म)

(ख) कि ओकर छोट भाई बराती न जायत : संग्या उपवाक्य ('ख' में प्रयुक्त छोट भाई के बिसेसन)

(ग) जे लोथ हे : बिसेसन उपवाक्य (ग में प्रयुक्त 'जायत क्रिया के करन के रूप में)

(घ) काहे कि ऊ घुर-फिर न सकऽ हे : क्रियाबिसेसन उपवाक्य।

संजुक्त वाक्य के बिग्रह : जउन वाक्य में एक से जादे सरल इया मिस्र वाक्य आपस में संजोजक अब्यय द्वारा जुड़ल होय, ओकरा संजुक्त वाक्य कहल जा हे। अइसन वाक्य के बिग्रह नीचे लिखल ढंग से कयल जाहे :

श्याम आगे बढ़ गेल आउ सोहन पीछे छूट गेल, बाकि आगे चल के दून्नो मिल गेलन।

(क) स्याम आगे बढ़ गेल : प्रधान उपवाक्य

(ख) सोहन पीछे छूट गेल : समानाधिकरन वाक्य

(ग) बाकि आगे चल के दुन्नो मिल गेलन : समानाधिकरन वाक्य संजोजन-आउ, बाकि।

●

वाक्य परिवर्तन

वाक्य परिवर्तन : जब कउनो वाक्य में रचना के दृस्टि से अइसन परिवर्तन कैल जाय कि ओकर बनावट तो बदल जाय बाकि अर्थ इया मूलभाव में तनिको अंतर न आवे तऽ ओकरा वाक्य परिवर्तन कहल जा हे।

जइसे : गनेस लड्डू खयलक।

ई वाक्य के अइसहूँ कहल जा सकलक हे :

गनेस से लड्डू खायल गेल।

वाक्य परिवर्तन ला कई रूप अपनावल जा हे, जे नीचे लिखल हे :

(क) सरल वाक्य के मिश्र वाक्य में परिवर्तन :

सरल वाक्य : मेहनती विद्यार्थी जरूर सफलता पावऽ हे।

मिश्र वाक्य : जउन विद्यार्थी मेहनती होवऽ हे, ओही सफलता पावऽ हे।

(ख) सरल वाक्य से मिश्र वाक्य में परिवर्तन :

सरल वाक्य : परेसान रहला पर भी ऊ हिम्मत न हारल।

मिश्र वाक्य : ऊ परेसान हल बाकि हिम्मत न हारल।

(ग) मिश्र वाक्य से सरल वाक्य :

मिश्र वाक्य : जखनी घाम रहत, हम बाहर न जायम।

सरल वाक्य : घामा रहला पर हम बाहर न जायम।

(घ) संजुक्त वाक्य से सरल वाक्य :

संजुक्त वाक्य : दुन्नो में बतरस होयल आउ लाठी चले लगल।

सरल वाक्य : दुन्नो में बतरस होयला पर लाठी चले लगल।

(ङ) करतरीवाचक वाक्य से कर्मवाचक वाक्य :

करतरीवाचक : राधा चिट्ठी लिखलक।

कर्मवाचक : राधा से चिट्ठी लिखल गेलइ।

(च) बिधिवाचक वाक्य से निसेधवाचक वाक्य :

बिधिवाचक : महेस सुरेस से बड़ा हे।

निसेधवाचक : सुरेस ओतना बड़ा न हे, जेतना महेस।

(घ) निसेधवाचक वाक्य से बिधिवाचक वाक्य :

निसेधवाचक : तोरा नियन लजकोकड़ कोई न होएत।

बिधिवाचक : तूँ सबसे जादे लजकोकड़ हऽ।

अभ्यास के प्रस्न

1. वाक्य बिग्रह केकरा कहल जा हे ?
2. उद्देस्य आउ बिधेय से तूँ का समझऽ हऽ?

   नीचे लिखल के वाक्य बिग्रह करऽ:-

   (क) सीता तोर बहिन अप्पन हाथ से सुन्दर फूल काढ़ रहल हे।

   (ख) मोहन कहलक कि ओकर छोट भाई जे बड़ी देहचोर हे, दूकाने न जाएत, काहे कि ऊ घुर-फिर न सके।

3. (क) 'धीरजी आदमी ही सुख-सान्ति पावऽ हे'-एकरा मिस्र वाक्य में बदलऽ।

   (ख) 'सुखाड़ पड़े से फसल जर गेल'-एकरा संजुक्त वाक्य में बदलऽ।

   (ग) 'राधा कविता से जादे तेज हे'-एकरा निसेधवाचक में बदलऽ।

   (घ) 'ऐस आउ आराम के न चाहऽ हे?' एकरा बिधिवाचक में बदलऽ।

●

पद–परिचय

पद-परिचय : कउनो वाक्य में जेतना पद होवऽ हे ओकर अलग-अलग स्वरूप होवऽ हे आउ ओकर अन्य पद सभन से संबंध भी होवऽ हे। पद-परिचय में एकरे बिस्लेसन हो हे।

1. संग्या के पद-परिचय : एकरा में वाक्य में आयल संग्या के भेद, लिंग, बचन, पुरुस, कारक, क्रिया आउ अन्य पद से संबंध बतावल जा हे। **जइसे** : इहाँ हिमालय, जे बिसाल परबत हे, खाड़ हे।

हिमालय : ब्यक्तिवाचक संग्या, कर्त्ताकारक, पुल्लिग, एकबचन, अन्यपुरुस।

2. सर्बनाम के पद-परिचय : एकरा में सर्बनाम के भेद, लिंग, बचन, पुरुस, कारक, वाक्य में संग्या के बदले अयला पर क्रिया के उल्लेख कयल जा हे। **जइसे** : हम अप्पन पाठ इयाद करऽ ही।

हम : पुरुसवाचक सर्बनाम, उत्तमपुरुस, उभयलिंग, एकबचन, कर्त्ताकारक, 'इयाद कर ही' क्रिया के कर्त्ता।

अप्पन : निजवाचक सर्बनाम, उभयलिंग, एकबचन, सम्बन्धकारक।

3. बिसेसन के पद-परिचय : एकरा में बिसेसन के भेद, लिंग, बचन, पुरुस, कारक आउ बिसेस्य बतावे पड़ऽ हे। **जइसे** : ओकरा भी एगो लाल साड़ी हल।

एगो : संख्यावाचक बिसेसन, एकबचन, अन्यपुरुस, साड़ी बिसेस्य के बिसेसन।

लाल : गुनवाचक बिसेसन, एकबचन, अन्यपुरुस, साड़ी बिसेस्य के बिसेसन।

4. क्रिया के पद-परिचय : क्रिया के पद-परिचय में भेद, लिंग, काल, बचन, पुरुस, वाच्य आउ अन्य पद से सम्बन्ध बतावल जा हे।

जइसे : सीता मंदिर चल गेल।

गेल : अकर्मक क्रिया, सामान्यभूत, उभयलिंग, एकबचन, अन्यपुरुस, करतरीवाच्य। एकर कर्त्ता सीता हे।

5. क्रियाबिसेसन के पद-परिचय : क्रियाबिसेसन के पद-परिचय में क्रिया के भेद आउ ऊ क्रिया पद के उल्लेख कैल जा हे, जेकर ऊ बिसेसता बतावऽ हे। **जइसे :**

ऊ गते–गते चलऽ हे।

रीतिवाचक, चलऽ हे क्रिया के बिसेसता।

6. अब्यय के पद-परिचय : एकर पद-परिचय में भेद आउ ओकरा से संबंध पद के चरचा कैल जा हे। **जइसे :**

अहा! केतना सुन्दर हे। अहा–बिस्मयादिबोधक अब्यय।

अभ्यास के प्रस्न

1. 'इहाँ जमुना, जे पूजनीय नदी हे, बहऽ हे।' ई वाक्य में संग्या के पद परिचय दऽ।
2. 'हम अप्पन आलमारी सजावऽ ही।' ई वाक्य में सर्बनाम के पद परिचय दऽ।
3. 'ऊ धीरे-धीरे भात खाहे आउ पढ़ के सुत जाहे' ई वाक्य के पद-परिचय दऽ।

बिराम आउ अन्य चिह्न

भासा के अर्थ बोध में सुगमता ला वाक्य में स्थान-स्थान पर कम इया अधिक समय तक ठहरे पड़ऽ हे। एही ठहराव के सूचना ला भिन्न-भिन्न चिह्न के परयोग कैल जा हे, जेकरा बिरामचिह्न कहल जा हे।

बिरामचिह्न के प्रकार

मगही में नीचे लिखल बिरामचिह्न के बेवहार होवऽ हे :

(1) पूर्न बिराम (2) अल्प बिराम (3) अर्द्ध बिराम

(4) प्रस्नवाचक चिह्न (5) बिस्मयादिबोधक चिह्न

(6) उद्धरन चिह्न (7) कोस्टक चिह्न

(8) लोप चिह्न (9) योजक चिह्न

(10) बिबरन चिह्न (11) लाघव चिह्न

(12) रेखिका चिह्न (13) पुनरुक्ति चिह्न

(14) त्रुटि चिह्न

(1) पूर्न बिराम : वाक्य के पूर्न समाप्ति पर पूर्न बिराम के परयोग कैल जा हे। **जइसे** : मोहन चल गेल। स्याम पहुँच गेल।

(2) अल्प बिराम : मगही में अन्य भासा नियन अल्प बिराम के परयोग सबसे अधिक हो हे। नीचे लिखल अवस्था में अक्सर एकर बेवहार कैल जा हे :

(क) कोई उक्ति के पहिले। **जइसे** : सोहन कहलक, ''हम कोलकत्ता जरूर जायम।''

(ख) दू इया तीन से अधिक सबद इया वाक्य खंड के एक दूसरा से अलग करे में। **जइसे** : हीरा, लखन, राधा, सोहन आउ मोहन ऐलन। जा, समझऽ आउ कुछ करके देखावऽ।

(ग) केकरो संबोधन करे में। **जइसे** : हे सखी, जा हऽ तऽ जा, बाकि बिसारिहऽ नऽ। हो बेटा, जा के तुरंत चिट्ठी लिखिहऽ।

(घ) जहाँ कोई वाक्य–'खंड काहे कि' 'बाकि' आदि सबद से सुरू हो हे, तो ऊ वाक्य खंड के पहले। **जइसे** : बेटी आयल तो हे, बाकि चारे दिन में चल जायत। कल समय पर न पहुँचम, काहे कि रिक्सा हड़ताल हे।

(ङ) हाँ, न, बस, अच्छा, जइसन सबद के बाद कोई वाक्य आवे तो ई बिभिन्न सबद के बाद। **जइसे** : हँ, ई काम करम। न, हम्मर जी न माने। बस, अब न कहऽ। अच्छा, कहऽ हऽ तो बिस्वास करही पड़त।

(च) दू भिन्नार्थक जुग्म सबद आउ वाक्य खंड के अलग करे में। **जइसे** : सुख आउ दु:ख, नेकी आउ बदी, जीवन में झेले ही पड़े हे। घर या बाहर, सूतते या जागते, भगवान के इयाद करे के चाही।

(छ) मिश्र वाक्य के आस्रित वाक्य से अलग करे में। **जइसे** : हम जइसही चले लगली, मोहन आ गेल।

3. **अर्द्ध बिराम** : अर्द्ध बिराम के बेवहार हुआँ कैल जाहे, जहाँ अल्प बिराम से अधिक ठहरे के जरूरत हो हे। एकर परयोग अक्सर मिश्र वाक्य में हो हे। **जइसे** : हड़ताल बुरा चीज हे; एकरा से राष्ट्र के भारी हानि हे। हम बिद्यार्थी ही; हमरा भारी काम में मत जोतऽ।

4. **प्रस्नवाचक** : जउन वाक्य से प्रस्न करे इया पूछे के बोध होए, हुआँ प्रस्नवाचक चिन्ह आवऽ हे। **जइसे** : का तूँ पढ़ लेलऽ? तूँ कठोर बचन काहे बोलऽ हऽ?

5. **बिस्मयादिबोधक** : बिस्मयादिबोधक चिह्न के परयोग नीचे लिखल स्थिति में होवऽ हे :

(क) मन के हरस, बिस्मय, बिसाद, घिरिना, भय, लज्जा आदि भाव परगट करे में। **जइसे** : पिया–मिलन के सुख के का कहना !

बाप रे! एतना दु:ख !

माय गे! लगे हे कि धरती फटे आउ समाऊँ।

(ख) पूज्य आउ गुरुजन ला सम्मान ब्यक्त करे में।

जइसे हे भगवान! तूँ ही सहारा हऽ।

(ग) सुभ कामना, असीरबाद परगट करे में।

जइसे : दूधो नहा! पूतो फलऽ !

तोहरा पर भगवान के किरिपा बरसे !

6. उद्धरन चिह्न : उद्धरन चिह्न के परयोग दू रूप में कैल जा हे :

एकहरा रूप में आउ दुहरा रूप में।

जइसे : एकहरा रूप में ' ' आउर दुहरा रूप में " "।

(क) पुस्तक, पत्र-पतरिका, ब्यक्ति बिसेस, लेखक, स्थान के नाम कोई बिसय के सीर्सक आदि उद्धरन करे में एकहरा उद्धरन चिह्न के बेवहार कैल जाहे।

जइसे : आज अचानक 'शंकराचार्य जी' के दरसन भे गेल। 'धर्मयुग' अच्छा पत्र हे। 'आकाशदीप' कहानी अच्छा हे।

(ख) कोई पुस्तक, लेखक इया बक्ता के कथन के ओही रूप में उद्धृत करे में दुहरा चिह्न के परयोग होवे हे।

जइसे : इन्दिरा गाँधी कहलन हल–"परिश्रम के अलावा कोई रास्ता न हे।"

मगही में एगो गीत के पंक्ति हे—"पान ऐसन पातर गे बेटी ! फुलवा ऐसन सुकुमार। कइसे सहबऽ गे बेटी ! ससुरिया में तरवार के धार।"

7. कोस्टक चिह्न : वाक्य में आयल कोई पद बिसेस के स्पस्ट करे में कोस्टक चिह्न के परयोग कैल जा हे।

जइसे : परिवार नियोजन ला सबसे सुन्दर उपाय हे (ब्रह्मचर्य के पालन)। .....(आज अदमी संयम खो देलक हे)।

8. पुनरुक्ति चिह्न : पुनरुक्ति चिह्न के बेवहार एक्के सबद के बार–बार लिखे में कैल जा हे।

जइसे : श्री मोहन सिंह, "स्याम" "राधा" आदि।

9. **योजक चिह्न** : योजक-चिह्न के बेवहार दू सबद के जोड़े में कैल जा हे। **जइसे** : खाना–पीना, सूतना–जगना, सुख–दुख, रुपया–पइसा, छोटा–नियर, बड़ा–ऐसन आदि।

11. **लाघव चिह्न** : लाघव चिह्न के परयोग कोई सबद के संच्छेप रूप में लिखे में कैल जा हे। **जइसे** : ता०=तारीख, डी०.लिट्०, डॉक्टर ऑफ लिटरेचर आदि।

12. **रेखिका चिह्न** : रेखिका चिह्न के परयोग कोई वाक्य के पूर्न करे में कैल जा हे। **जइसे** : आदमी के सफलता के मूल मंत्र हे—परिस्रम आउ लगन।

13. **बिबरन चिह्न** : बिबरन चिह्न के परयोग कोई बिसय इया पद के बेयाख्या करे में कैल जा हे। **जइसे** : नीचे लिखल सबद के अर्थ बतावऽ : अमृत-मंथन, सभ्यता–संस्कृति आदि।

14. **त्रुटि चिह्न** : जदि लेख के बीच में कोई अच्छर, सबद , पर, वाक्यांस इया वाक्य लिखे में छूट जाए, तो हुआँ त्रुटि चिह्न लगा के छुटल अंस के एगो किनारा में या ऊपर में लिख देवल जाहे।

जइसे : घर से कागज, कलम ∧ किताब आउ स्याही ले अइहऽ। कलम ∧

अभ्यास के प्रस्न

1. 'बिराम-चिह्न' से का समझऽ हऽ ? बिराम-चिह्न कै गो होवऽ हे, चिह्न से साथ बतावऽ?

1. अल्प बिराम के परयोग कहाँ–कहाँ होवऽ हे?

2. योजक चिह्न, प्रस्नवाचक, अर्द्ध बिराम के परयोग कहाँ-कहाँ होवऽ हे?

मुहावरा आउ लोकोक्ति

मुहावरा अइसन लाच्छनिक वाक्यांस हे जे सामान्य अर्थ से भिन्न बिलच्छन आउ चमत्कारपूर्न अर्थ के प्रतीक हे। मुहावरा के अर्थ आउ बेवहार प्रसंग के अधार पर होवऽ हे। हरेक मुहावरा के अप्पन लच्छार्थ होवऽ हे। बिना लच्छन इया ब्यंजन सक्ति के एकर अर्थ लच्छित न हो सकऽ हे। मुहावरा के परयोग स्वतंत्र रूप से न हो के पूर्न वाक्य में होवऽ हे।

लोक में प्रचलित ब्यंजनापूर्न कथन के लोकोक्ति इया कहावत कहल जा हे। कहावत के परयोग से भासा बहुत अर्थब्यंजक आउ रोचक हो जा हे। लोकोक्ति लोक प्रसिद्धि के रूप होवऽ हे। अक्सर ई कउनो कहानी, घटना इया चिरसत्य पर आधारित रहऽ हे।

मुहावरा आउ लोकोक्ति में एगो मुख्य अन्तर ई हे कि मुहावरा के परयोग वाक्य के अन्तरगत हो हे बाकि लोकोक्ति इया कहावत के परयोग एकदम स्वतंत्र आउ पूर्न वाक्य के रूप में हो हे। अइसे तो मुहावरा आउ लोकोक्ति के अप्पन-अप्पन बिसेसता हे, बाकि दुन्नो में एक बात के समानता हे कि दुन्नो के बेवहार से भासा में चुस्ती, चमत्कार आउ लालित्य आ जा हे।

लोकोक्ति इया कहावत

1. **अँधरा के आगे रोवे, अप्पन दीदा खोवे**—बेसमझ के आगे अप्पन दुःख कहे से कोई लाभ न होवऽ हे।
2. **अंधड़ में बगुला के बाह**—भारी उत्पात में कमजोर प्रानी के कुछ भी बस न चले ?
3. **अंधा में काना राजा**—मूर्ख के बीच थोड़ा अक्ल वाला के भी मान होवऽ हे।
4. **अंत भला तो सब भला**—कोई काम में अंतिम सफलता के ही मोल होवऽ हे।

5. **अहार ला आदमी पहाड़ चढ़े हे**—जीविका ला आदमी कइसनो भारी कठिनाई झेले से न डरऽ हे।

6. **अबरा के मउगी सब के भउजी**—कमजोर के चीज पर सब कोई अधिकार जमावऽ हे।

7. **अदरा गेल, तीन गेलन, सन, साठी, कपास**—अदरा नच्छत्र में बरसा न होवे पर सन, साठी, धान आउ कपास के खेती बरबाद हो जा हे।

8. **अप्पन डफली अप्पन राग**—एक मत होके काम न करना।

9. **अप्पन मुँह मियाँ मिठू**—अप्पन बड़ाई अपने करके आदर चाहना।

10. **अपनो दही के कोई खट्टा कहे हे**—अप्पन खराब चीज के कोई खराब न कहे।

11. **सोना के लूट कोइला पर छाप**—अधिक हानि छोड़ के कम हानि के चिंता करना।

12. **एक म्यान में दू तलवार**—एक्के जगह में दू दुस्मन घँसान होना।

13. **एक तो करैला, ऊपर नीम चढ़ल**—बुरा के आउ बुरा संगत मिलना।

14. **एक तो चोरी, ऊपर सीना जोरी**—अपराधी होके भी निडरपना देखाना।

15. **एगो हरे सौंसे गाँव खाँसी**—तकलीफ ज्यादा आउर उपचार के साधन कम होना।

16. **ओछा के प्रीत बालू के भीत**—छिछला ब्यक्ति के दोस्ती छनिक हो हे।

17. **ओस चाटे से पियास न बूझे हे**—सही जरूरत में कम साधन से काम न चलऽ हे।

18. **कहाँ राजा भोज कहाँ गांगू तेली**—बड़ा से छोटा के तुलना न हो सकऽ हे।

मुहावरा

धुक-चुक करइत	:	होह-पोह में रहल
पगड़ी रखल	:	इज्जत रखल

बुतात देवल	:	खोराकी चलावल
भाग चरचरायल	:	एकाएक भाग खुलल
मध चुअल	:	मीठा बोलल
रोआं नोचल	:	सतावल
सिहरी फटल	:	हिचक मेटल
हहास कयल	:	दोसर के बढन्ती देख के जरल
हाथ पीअर कयल	:	बिआह कयल
हाथ पसारल	:	माँगल
हियाव होयल	:	हिम्मत भेल
हेठार में पड़ल	:	ठेठ देहात
चक्की पीसल	:	लगातार काम करइत रहल
घर तलासी कयल	:	घर में खोज-बिन कयल गेल
सबरी के बइर होल	:	जादे भक्ति आउ भरोसा भेल
सोवाहा होयल	:	सब खतम भेल
पासा फेंकल	:	भाग भरोसा करके काम कयल
सवाँग में घून लगल	:	काम करे में असफल होयल
दवा दारू कयल	:	सेवा कयल
पारा गरम भेल	:	खिसिआयल
भट्ठा बइठल	:	सब खतम होयल
छौ इँच छोटा कयल	:	गरदन काटल
कन्या रासि के भेल	:	निकम्मा होल
सनीचरा सवार होल	:	भाग्य खराब भेल
छौ पाँच कयल	:	अधिक बिचार कयल
लेना एक न देना दू	:	कोई संबंध न रखल
लोह माछर होना	:	बिखियायल
अब तब होना	:	मरे के हालत में होयल

तुला राशि के भेल	:	बहुत खिसिआयल
उल्लू के पट्ठा होयल	:	मूर्ख होयल
पापड़े बेलल	:	काम न मिलल
दिल दुखावल	:	चोट पहुँचावल
दिल में समायल	:	करेजा में समायल
कान देवल	:	धेयान देवल
मुँह जूठी कयल	:	नाम मात्र के खाना खायल
पेट जरल	:	बहुत भुखायल
पेट में बात न पचल	:	कोई बात न छिपावे वाला
पेट फटल	:	धीरज न धरल
हाथ जोड़ के पीछे पड़ल	:	तन-मन से पीछे पड़ल
लाल पीअर भेल	:	गुस्सा भेल
दीदा उलटल	:	अस्वीकार कयल
घिउ के दिआ जरावल	:	आनंद मनावल
पेउन लगावल	:	बात सुधारल
पीढ़ा देवल	:	मान-आदर कयल
अँचरा पसारल	:	प्रार्थना कयल गेल
उसकुन काढ़ल	:	छेड़ कयल
एक से एकइस होयल	:	लगातार बढ़ोत्तरी भेल
ओरहन देवल	:	सिकायत कयल
खोपसन देवल	:	उलाहना देवल
धमलउर लगावल	:	भीड़-भड़क्का भेल
टाट उलटल	:	दिवाला भेल
ढोल पीटल	:	सुना के कहल
थू-थू होल	:	घिरकारल
घोघना फूलल	:	रूसल

अभ्यास के प्रस्न

1. नीचे लिखल कहावत के अइसन परयोग करऽ कि ओकर अर्थ स्पस्ट हो जाय।

   ओछा के प्रीत बालू के भींत

   ओस चाटे से पियास न बूझे हे

   सोना के लूट कोइला पर छाप

   अपनो दही के कोई खट्टा कहे हे

   एक तो करैला, ऊपर नीम चढ़ल

2. नीचे लिखल मुहावरा के अर्थ लिखऽ आउ वाक्य में परयोग करऽ।

   पेट में बात न पचल

   हाथ जोड़ के पीछे पड़ल

   एक से एकइस होयल

   उल्लू के पट्ठा होयल

   तुला रासि के भेल

गण	सूत्र	चिह्न	उदाहरन	देवता	फल
तगण	ताराज	ऽऽ1	आकाश	नभ	निष्फल
रगण	राजभा	ऽ1ऽ	भारती	अग्नि	मृत्यु
जगण	जभान	1ऽ1	जबान	भानु	रोग
भगण	भानस	ऽ11	साहस	चन्द्रमा	कीर्ति
नगण	नसल	111	जलज	नाग	सुख
सगण	सलगा	11ऽ	वरदा	वायु	वास

तगण, रगण, जगण आउ सगण असुभ गण मानल जा हथ। इनकर बेवहार छन्द के आरम्भ में न कैल जाए।

5. यति : यति माने बिराम इया बिस्राम हो हे। लम्बा–लम्बा चरन में उच्चारन के स्पस्टता, लय आउ सुबिधा ला बीच-बीच में रूकल जरूरी हे। सामान्यतः हरेक चरन के अन्त में यति के बेवहार हो हे। बाकि कभी–कभी बीच में यति आ जा हे।

6. गति : छंद में संगीत तत्व महत्वपूर्न होवऽ हे। एकरा ला लय आउ प्रवाह पर धेयान पड़ऽ हे। एही प्रवाह आउ लय गति कहलावऽ हे। छन्द में चरन के मात्रा आउ सबद के क्रम ठीक रहे से गति अपने आप आ जा हे। गति न रहे से चरन में लयात्मकता न आवे।

7. तुक : छन्द के चरनान्त में समान बरन–स्थापन के तुक कहल जा हे। **जइसे**–प्रतिषाली–मराली; गात–प्रभात आदि तुक बन्दी गद्य के पद्य से अलग करऽ हे। आज कल सब छन्द तुकान्त न होवे। कुछ छन्द अतुकान्त भी होवऽ हे।

छन्द के भेद

छन्द के ***तीन भेद*** करल जा हे :

1. बरनिक 2. मात्रिक 3.मुक्त छन्द

1. बरनिक छन्द : जेकरा में बरन के संख्या आउ क्रम के दृस्टि से पद रचना करल जा हे ऊ बरनिक छन्द कहलावऽ हे।

2. मात्रिक छंद : जेकरा में मात्रा के आधार पर पद्य रचना करल जा हे, ऊ मात्रिक छन्द कहलावऽ हे।

बरनिक आउ मात्रिक दुन्नो तरह के छन्द के ***तीन-तीन*** भेद हो हे :

(1) **सम** : एकरा में पद्य के चारो चरन समान होवऽ हे।

(2) **अर्द्धसम** : एकरा में पहिला, तीसरा आउ दूसरा, चौथा चरन के बरन आउ मात्रा में समानता हो हे।

(3) **बिसम** : एकरा में चारो चरन के बरन इया मात्रा में बिसमता होवऽ हे।

26 बरन तक के बरनिक छंद साधारन आउ एकरा अधिक बरन वाला बरनिक छन्द दण्डक कहलावऽ हे जबकि मात्रिक छन्द में 32 मात्रा तक के छन्द साधारन आउ 32 से अधिक मात्रा वाला दंडक कहलावऽ हे।

3. मुक्त छन्द : मुक्त छन्द में बरन आउ मात्रा के बन्धन न हो हे। एकर चरन में असमानता हो हे।

मात्रा के गिनती (गनना) के सामान्य नियम

मात्रिक छन्द में मात्रा के गनना के महत्वपूर्न स्थान हे। मात्रा के गनना के सामान्य नियम नीचे लिखल हे :

1. अ, इ, उ, ऋ ह्रस्व स्वर आउ इनका से संजुक्त ब्यंजन लघु होवऽ हे। **जइसे** : असकत (1111) आदि।
2. चन्द्र बिन्दु जुक्त बरन लघु हो हे। जइसे-हँसल (111) आदि।
3. दीर्घ स्वर-आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ आउ इनका से संजुक्त ब्यंजन गुरु हो हे। **जइसे** : रामा-ऽऽ, गीता-ऽऽ आदि।
4. संजुक्ताच्छर के पहिले वाला हस्व बरन गुरु मानल जा हे। **जइसे** : तथ्य-ऽ।, कथ्य-ऽ।
5. अनुस्वारजुक्त बरन गुरु हो हे। **जइसे** : कंधा-ऽऽ
6. बिसर्ग युक्त बरन गुरु हो हे। **जइसे** : दु:ख-ऽ।

छन्द बिचार

छन्द :'पद्यरचना' जे अच्छर के संख्या आउ क्रम, मात्रा के गिनती आउ यति–गति से सम्बद्ध बिसेस नियम से नियोजित होय, छन्द कहला हे।

'पद्य के सृस्टि 'छन्द' के अनुसार होवे के कारन एकरा (छन्द के) पद्यरचना के मानक कहल जा हे। एकरा से 'पद्य' में प्रवाह, लय, गेयता, संगीतात्मकता के साथे–साथ प्रभावान्विति के आधान हो हे।

छन्द के अंग

छन्द के अंग नीचे लिखल हे : 1. चरन (पाद) 2. बरन आउ मात्रा 3. संख्या आउ क्रम 4. गण 5. यति 6. गति 7. तुक

1. चरन इया पाद : 'पद्य के एक पंक्ति चरन कहलावऽ हे। 'पद्य' के हरेक चरन में बरन इया मात्रा के संख्या क्रमानुसार नियोजित करल जा हे।

संख्या के अधार पर चरन के दू भेद हे–सम आउ बिसम

'पद्य के दूसरा आउ चउथा चरन सम आउ पहिला आउ तीसरा चरन बिसम कहलावऽ हे।

2. बरन आउ मात्रा : बरन माने अच्छर होवऽ हे। बरन दू तरह के होवऽ हे–ह्रस्व आउ दीर्घ। सामान्यत: ह्रस्व स्वर वाला बरन के एक मात्रा होवऽ हे आउ ऊ लघु कहलावऽ हे। दीर्घ स्वर वाला बरन के दू मात्रा हो हे आउ ऊ गुरु कहलावऽ हे।

(क) अ, इ, उ, ऋ आउ ऌ ह्रस्व स्वर हथ। ई सब के उच्चारन में जे समय लगऽ हे ओकर नाम मात्रा हे। ह्रस्व स्वर के एक मात्रा मानल जा हे। लघु बरन के चिन्ह हे :

(1) सींधा खड़ा रेखा : (।)।

(ख) आ, ई, ऊ ॠ, ए, ऐ, ओ, औ, दीर्घ स्वर हे। लघु इया ह्रस्व स्वर के अपेच्छा दीर्घ स्वर के उच्चारन में अधिक समय लगऽ हे। ई लेल इनका

दीर्घ स्वर कहल जा हे। इनकर दू मात्रा मानल जा हे। गुरु इया दीर्घ बरन के चिन्ह हे : (ऽ) बिकारी इया अंग्रेजी के एस (ऽ) अच्छर।

3. संख्या आउ क्रम : बरन इया मात्रा के गनना के संख्या कहल जा हे।

जइसे : पान सन पातर सजनी, फुलवा सन सुकुमार।

इहाँ मात्रा के संख्या 24 आउ बरन के संख्या 19 हे।

लघु आउ गुरु बरन के मात्रा के स्थान के निर्धारन इया नियोजन के क्रम कहल जा हे।

4. गण : तीन बरन के समूह गण कहलावऽ हे। गण से लघु–गुरु के निर्धारन आउ गनना हो हे। गण आठ हथ, जिनकर जानकारी ला ई स्लोक प्रचलित हे :

आदि मध्यावसानेसु य–र–ता यान्ति लाघवम्।

भ–ज–सा गौरवं यान्ति म–नौ तु गुरु लाघवम्।।

अर्थात् यगण, रगण आउ तगण में क्रमसः पहिला, दूसरा आउ अन्तिम बरन लघु होवऽ हे। भगण, जगण आउ सगण में क्रमसः पहिला, दूसरा आउ अन्तिम बरन गुरु होवऽ हे। बाकि मगण में तीनो गुरु आउ नगण में तीनो लघु बरन होवऽ हे।

गण के नाम आउ ओकर रूप के स्पस्ट करे ला एगो सूत्र भी प्रचलित हे :

'यमाताराजभानसलगा'.

ई सूत्र के पहिला आठ बरन, आठ गण के नाम हे आउ आखिरी दू बरन 'ल' आउ 'ग' लघु आउ गुरु के सूचक हथ। जउन गण के उल्लेख करेला हे, ऊ गण के आरंभ के अच्छर आउ ओकर आगे के दू बरन तक लघु इया गुरु देके ओकर रूप जानल जा हे। बिभिन्न गण के नाम, रूप, चिह्न, उदाहरन आउ फल आदि के बिबरन :

गण	सूत्र	चिह्न	उदाहरन	देवता	फल
यगण	यमाता	1ऽऽ	गजाला	जल	वृद्धि
मगण	मातारा	ऽऽऽ	झोराहा	भूमि	मंगल

7. सबद के अन्त के अर्ध ब्यंजन के लघु मानल जा हे।

जइसे : श्रीमान्–ऽऽ।

मगही में कोई बरन के ह्रस्व इया दीर्घ अनायास रूप में करल जा सकऽ हे। ई उच्चारन पर निर्भर करऽ हे। जब लघु बरन के उच्चारन गुरु बरन जइसन करल जाए तब ओकरा गुरु मान के मात्रा के गिनती करल जा हे। अइसहीं जब गुरु बरन के उच्चारन लघु बरन जइसन करल जा हे तब ओकर मात्रा के गिनती लघु बरन नियन करल जा हे।

प्रमुख छन्द

(1) चौपाई : चौपाई मात्रिक छन्द हे। एकरा में ***चार चरन*** होवऽ हे।

एकर हरेक चरन में सोलह गो मात्रा होवऽ हे। पहिला आउ दूसरा चरन के तुक आउ तीसरा आउ चउथा चरन के तुक मिलऽ हे। चरन के अन्त में जगण (।ऽ।) इया तगण (ऽऽ।) के न रखल जा हे।

उदाहरन : हरखित भेलन रामजी कइसे।
प्यासल हिरन पाइ जल जइसे।।
भेलन बानर–भाल अनन्दा।
मुसकत कुमुद पाप जस चन्दा।। —*परमेश्वरी*

उदाहरन : तेज जहाँ उहँ सकल खजाना।
चमकत पुनिया चान समाना।।
चान चकोर निहारत राती।
ढिबरी संग तेल अरु बाती।। —*घमण्डी राम*

(2) रोला : रोला अवतारी जाति के सममात्रिक छन्द हे। एकर हरेक चरन में चौबीस मात्रा होवऽ हे। इगारह आउ तेरह पर यति के बिधान हे।

उदाहरन : 1. फूल–पात झुलस गेल धरती भेलय चुल्हा।
जनावर पियासल फिरय काग के मुँह खुल्ला।। —*मिथिलेश*

2. हम ही कइसन पूत, नित पिये खून के घूँट।
खाये नित बबूरे, हम तो ओहे ही ऊँट।।—*घमण्डीराम*

(3) दोहा : दोहा अर्द्धसम मात्रिक छन्द हे। एकर पहिला आउ तीसरा चरन में तेरह–तेरह मात्रा आउ दूसरा आउ चउथा चरन में इगारह–इगारह गो मात्रा होवऽ हे। यति चरन के अन्त में होवऽ हे। बिसम चरन के आदि में जगण न रहऽ हे आउ सम चरन के अन्त में गुरु–लघु आना जरूरी हे आउ अन्त में दुन्हु के तुको मिलऽ हे।

उदाहरन : 1. तीन ताप से हिय हमर, तपल रहे दिन–रात।
अइहऽ भले न स्याम तू, पुलक पसिजतो गात।।

—जनक नन्दन प्रसाद सिन्हा 'जनक'

2. पर्यावरन बचाव के, एक्के साधन नेक।
रोपऽ जब दस पेड़ के, तबे उखाड़ऽ एक।।

—डॉ अभिमन्यु प्रसाद मौर्य

3. मानुख जग में जीत के, सेहरा जबहि पाय।
पाँव न धरती पर पड़े, उड़त अकासे जाय।।

—घमण्डी राम

(4) सोरठा : सोरठा अर्द्धसममात्रिक छन्द हे। ई दोहा के ठीक उल्टा हो हे। एकर पहिलका आउ तिसरका चरन में इगारह–इगारह मात्रा आउ दुसरका आउ चउथा चरन में तेरह–तेरह मात्रा होवऽ हे। सम चरन के आदि में जगण न होवऽ हे आउ बिसम चरन के आखरी बरन लघु रहऽ हे आउ दुन्हु के तुको मिलऽ हे।

उदाहरन :1. धरती करइ बियाह, लगावे चन्दा उबटन।
हरा घोघ के ओट, चलावे दुल्हिन चितवन। *—रामकृष्ण मिश्र*

2. घर में छिपे सरीफ, जब नाचे सगरे दुस्ट।
सज्जन भूखे पेट, दुरजन मखन तबे पुस्ट।। *—घमण्डी राम*

(5) कुण्डलिया : ई एगो संजुक्त मात्रिक छन्द हे। ई दू मात्रिक छन्द–'दोहा' आउ 'रोला' के संजोग से बने हे। एकरा में छह चरन हो हे। हर चरन में 24-24 मात्रा होवऽ हे। एकर सुरू के दू चरन एगो दोहा के रूप मे रहऽ हे। ओकर बाद चार चरन रोला छन्द में रहे हे। बाकि रोला के पहिला चरन, दोहा के अन्तिम चरनवाला खंड होवऽ हे। कुंडलिया में प्रारंभ में बेवहार में आवे वाला सबद ओकर अन्त में भी प्रयुक्त कैल जा हे। 'यति' दोहा आउ रोला नियन होवऽ हे।

उदाहरन : 1. दुलहिन बारह बरस के साठ बर्स के दुल्हा।
चलल उ बरात सजा के, मुहाँ जइसे चुल्हा।।
मुहाँ जइसे चुल्हा, सिकुड़ल तनमा के चाम।
लगऽ हइ लँगूर नियन, ऊ पूरा बूढ़ा झाम।।
कहई 'मगहिया' कवि आल बुढ़वा के दुरदिन।
देख के अइसन वर, उहाँ से भागल दुल्हिन।।

—संत राम नगीना सिंह 'मगहिया'

2. पीये लगलन दूध जब, सगरो सिरी गनेस।
चम्मच आउ गिलास ले, दउड़ल सउँसे देस।।
दउड़ल सउँसे देस, मचल हल्ला बिदेस में।
बदल के पापी रूप, पहुँचलन भक्त बेस में।।
कहे 'मौर्य' मुसकाय, आज भगवानो जगलन।
शक्ति देखावे ला, दूध ऊ पीये लगलन।।

—डॉ० अभिमन्यु प्रसाद मौर्य

(6) **अरिल्ल** : अरिल्ल छन्द में सोलह मात्रा होवऽ हे।
चरन के अन्त में दूगो लघु (।।) होवऽ हे।

उदाहरन : पग चंचल तुरते में ठिठकल,
बस एके कदम चल के ठमकल।
ऊ अपलक पूत निहारित हल,
तम चुपके पाँव पसारित हल।

—प्रो० अवधेश कुमार सिन्हा

7. **हरिगीतिका** : हरिगीतिका जौगिक जाति के सममात्रिक छन्द हे। एकर हरेक चरन में अठाइस मात्रा होवऽ हे। सोलह आउ बारह मात्रा पर यति होवऽ हे। चरन के अन्त क्रम में एगो लघु आउ एगो गुरु होवऽ हे।

उदाहरन : पता न कइसे तोरा हम्मर, तनिक याद न आवऽ हे।
भादो के ई रैन अँधरिया, हाय बहुत सतावऽ हे।।
झिंगुर के झन्नाहट सुन के, चैन तनिक न आवऽ हे।
बरखा के हहरौआ हावा, हमरा हद जड़ावऽ हे।।

8. **किरीट सवैया** : किरीट सवैया चौबीस अच्छर के संस्कृति जाति के बरनिक समवृत छन्द हे। एकर हरेक चरन में आठ गो भगण (ऽ।।) होवऽ हे।

उदाहरन : मानव दानव से बढ़ गेलक, भारत पापन से भर गेलक।
केकर–केकर नाम धरूँ हम, लोगन हे मुख छाजन देलक।।
ओढ़न–लोढ़न चोरन झूठन, रूप न देखल जाय सके अब।
भेदन–छेदन खोलब जेकर, मुँह में लकड़ी लगवे जब।।

—प्रो० दशई सिंह

9. लावनी : लावनी महातैथिक जाति के सममात्रिक छन्द हे। एकर हरेक चरन में तीस मात्रा होवऽ हे। सोलह आउ चउदह मात्रा पर यति होवऽ हे। चरन के अन्त में लघु–गुरु के कोई बंधन न होवऽ हे।

उदाहरन : उमड़–घुमड़ घन घिरल अकसवा, चमकल आँख के कोर रे।
राधा के फोरलक गगरिया, नटखट नवल किसोर रे।।
ओकर दसा देख घन कानै, टपकइ टपाटप लोर रे।
या चाँदी के हँसली छिन के, भागलइ हाथा चोर रे।।

—जयराम सिंह

10. तोमर : तोमर के हरेक चरन में बारह मात्रा होवऽ हे। चरन के अन्त में एगो गुरु बरन (ऽ) आउ एगो लघु बरन (1) होवऽ हे।

उदाहरन : हरिअरि बिछल हर ठाउँ।
देख भारत के गाउँ।।
गूँज हइ मंगल गीत।
जग्ग हइ मन में प्रीत।। *—शिवदानी भारती*

अभ्यास के प्रस्न

1. छन्द केकरा कहल जा हे? छन्द के अंग पर अप्पन बिचार ब्यक्त करऽ।
2. छन्द के भेद कै गो होवऽ हे ? बरनन करऽ।
3. नीचे लिखल छन्द के उदाहरन के साथ बरनन करऽ–चौपाई, दोहा, रोला, सोरठा, कुण्डलिया।